वर्ष ७ : अंक ८ पक्ष : प्रथम १५ जुलाई, २००२

श्रमण-संस्कृति पाक्षिक

जिनवर

भारतीय कृषि उद्योग के भगीरथ:

श्री भंवरलाल जैन

भारत के राष्ट्रपति
श्री. आर. वेंकटरमन्
से ए.आर.भट उद्यमी पुरस्कार
ग्रहण करते हुए
श्री भंवरलाल जैन.

आंध्र प्रदेश के तत्कालीन
राज्यपाल (अब उपराष्ट्रपति)
श्री कृष्णकान्त से हैदराबाद
में औद्योगिक अभियन्ता
पुरस्कार स्वीकारते हुए
श्री भंवरलाल जैन.

उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय
के कुलपति श्री एस.एफ.पाटील
और गोदावरी महाविद्यालय के
अध्यक्ष श्री उल्हास पाटील
की उपस्थिति में 'शिक्षा के
सांस्कृतिक स्वरुप' कार्यशाला
का उद्‌घाटन करते हुए
श्री भंवरलाल जैन

श्री भंवरलाल हीरालाल जैन :
पहली पीढ़ी के माननीय उद्योगपति

सीधी-सादी शुरूवात :

एक छोटे गाँव के एक कृषक परिवार में जन्मे श्री भंवरलाल हीरालाल जैन वाणिज्य व विधि की पदवी लेकर, सच कहें तो, महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग के वर्ग-१ राजपत्रित अधिकारी होने वाले थे। फिर भी ख़ुद के मनानुसार उन्होंने १९६२ में घर की सारी पूँजी (रु. ७,०००/-) लगाकर रॉकेल के वितरण की जिम्मेदारी ली। रॉकेल से भरा ठेला लगाकर घर-घर जाकर विक्रय करने वाले भँवरलालजी को देखे हुए लोग आज भी जलगाँव में हैं।

कर्म-योग :

बीज, खाद, जन्तुनाशक व ट्रैक्टर्स के साथ ही डीज़ल जैसी, कृषकों को लगने वाली वस्तुओं की सप्लाई श्री जैन ने १९६३ से १९७८ तक स्वदेशी व अन्तरराष्ट्रीय नामी कम्पनियों का माल बेचते हुए ही की। देखते-देखते यह विक्री ३० लाख से १० करोड़ तक पहुँची। उन्होंने केवल कड़ी मेहनत व व्यावसायिक नैतिकता से, कृषकोपयोगी पदार्थों की विक्री व वितरण में पूरे देश में नाम कमाया। यह हमारा सौभाग्य है कि एक समय के छोटे-से पौधे को विशाल औद्योगिक साम्राज्यवृक्ष में रूपान्तर होकर अब ३५० करोड़ की सम्पत्ति तक पहुँचते हमने देखा है।

१९७८ में पपीते से दूध के 'पेपेन' नाम का एन्जाइम मिलने का पता श्री जैन को लगा। यह प्यासे को कुआँ मिलने जैसे था। वह दिन और आज वे अतिशुध्द पेपेन के नम्बर एक उत्पादक-निर्यातक बने रहे हैं। देश के संशोधन विकास व नवनिर्माण के प्रयत्नों के महल की यह एक ईंट जैसी है। १९८० में श्री जैन ने पी.वी.सी. पाइप्स की दुनिया में कदम रखा। सिंचाई की परम्परा की पुरातन कल्पनाओं व साधनों को शाश्वत तिलाञ्जलि देनेवाला यह उत्पादन कृषकों के दरवाज़े पर कामधेनु बाँधने जैसा था।

१९८७ में उन्होंने, देश के ग्रामीण भाग की पहली रजिस्टर्ड कम्पनी 'जैन इरिगेशन सिस्टिम्स लि.' की स्थापना की व इससे देखते-देखते राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सफलता प्राप्त की। लगभग १० लाख एकड़ की भूमि इससे, ड्रिप इरिगेशन के अन्दर आई व इससे कई अल्प व मध्यम भू-धारक कृषकों को लाभ हुआ। यह शायद इस सदी में खेती के लिये सबसे अच्छी घटना थी। यह सिंचाई तन्त्रज्ञान आज कोई ५० विविध फसलों के लिये उपयुक्त, लोकमान्य, टिकाऊ, लाभप्रद व बचतकारी है। खेती से जुड़े अनेक कृषकों, मतदाताओं, प्रशासकों व कई अन्यों को यह ज्ञानामृत देने के लिये असंख्य कृषक मेले, प्रशिक्षण वर्ग, चर्चासत्र व प्रात्यक्षिक आयोजित किये गये। इस महान् कार्य को पूरा करने के लिये श्री जैन ने अपने जीवन और कृतित्व का एक बड़ा अंश व्यतीत किया है। इस तरह पहले जहाँ कुछ नहीं था। वहां पर उन्हों ने एक कृषि उद्योग का स्वप्न साकार किया।

उन्होंने अपने बलबूते १००० एकड़ में कृषि संशोधन व विकास केन्द्र की स्थापना की। यह कृषि केन्द्र सम्भवतः निजी क्षेत्र का अपनी प्रकार का एक ही कृषि केन्द्र होगा। देखा जाये तो इस केन्द्र ने किस प्रकार का प्रयोग नहीं होता ? किस प्रकार का संशोधन नहीं होता ? बिल्कुल बंजर जमीन को कृषि लायक बनाने के लिये सबसे किफायती पध्दति, रीति, मिट्टी और जलसंधारण, हरितगृह, बेहतर उत्पादन के लिये खाद, सींचाई की व्यवस्था कृषि में उत्पादन बढ़ाने के लिये, फलों के बाग लगाने के लिये जंगल लगाने के लिये, और इसी प्रकार के अभिनव प्रयोगों के लिये सारी सुविधायें उपलब्ध हैं।

कृषि उत्पादन में वृध्दि किस प्रकार होगी इस के लिये श्री जैन के अनवरत प्रयत्न चालू रहते हैं। जैव-तकनीकी से उपजे उतक संवर्धन (टिशू कल्चर) द्वारा विकसित केले की नयी जाती का उपयोग उन्होंने किया है। इस प्रकार के एक ही तरह के और रोगमुक्त केले के पौधे एक का तरह का नवनिर्माण ही हैं। अब यह पूर्ण रूप से सिध्द हो चुका है कि उतक संवर्धन (टिशू कल्चर) तकनीकी से केले की फसल एक समान बढ़ती है, जल्दी तैयार होती है, उत्पादन बढ़ता है और गुणवत्ता भी सुधरती है। जैविक खाद और जैविक जन्तुनाशक में सुधारणा करने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी श्री जैन ने अब हाथ में ली है। केले की तरह ही आम फसल पर प्रयोग करने के लिये प्याज के निर्जलीकरण के लिये और सब्जियों को टिकाऊ बनाने के लिये श्री जैन ने हाल ही में एक अन्न-प्रसंस्करण केन्द्र की स्थापना की है। इस केन्द्र में अन्तराष्ट्रीय स्तर की तकनीकी सुविधा उपलब्ध है। इस केंन्द्र की स्थापना द्वारा उन्होंने अपने स्वप्न को साकार किया। उन्होंने किसान को अत्याधुनिक सामग्री ले कर दी। किसान का उत्पादन खरीदना और उस पर प्रोसेस कर माल का मूल्य वृध्दि कर निर्यात करते।

वास्तव में श्री जैन ने न सिर्फ पी वी सी पाईप का उत्पादन किये बल्कि इस नवीनतम बूंद सिंचन तकनीक का प्रचार प्रसार भी किया। उजाड जमीन पर खेत लहलहाते जैविक खाद का प्रथम बार बाजार तैयार किया और कलर से नई-नई कृतिया की। श्री जैन इस प्रकार किसानों को प्रगतिशील राहपर लाये और उनकी जीवन सतह में आमूल-चूल परिवर्तन की वेला ले आये। जलगांव जैसी उसर भूमि के लिये उन्हें हरित क्रान्ति के जनक कहना कोई अतिश्योक्ति न होगी।

कर्मभूमि :

जलगांव जैसी दूरस्थ सुप्त पठारी भूमि श्री जैन की कर्म भूमि रही जहां उन्होंने ४०० करोड से ज्यादा की पूंजी खेती और निर्यात उद्योग में लगाई तथा ३००० से ज्यादा दुःखी जनों को रोजगार दिया।

कार्यक्षेत्र :

खेती आधारित -
- पी.वी.सी. जो काफी दाब सह सकती है।
- बूंद सिंचन् यंत्र त्वरया (एल.एन.डी.पी.)
- तुषार सिंचन प्रणाली (एच.डी.पी.)

खेती आधारित उद्योग -
- उतक नीम आधारित
- जैविक खाद
- हरित गृह वधाया गृह

खेती उत्सर्जित पदार्थों से बनी खाद फल और सब्जियों पर होने वाली प्रक्रिया -

- प्याज, सब्जी और पपेन का निर्जलीकरण निर्यात के लिये पॉलीमर प्रक्रिया
- पी.वी.सी. व पी.सी. शीटस् (१००%) निर्यात
- पी.वी.सी. के दरवाजे/खिडकीयों के लिये पतरे

नैसर्गिक साधनसम्पत्ति पर आधारित :
सौरबम्ब नैसर्गिक पत्थरों की खान व प्रोसेसिंग

कार्य-शिखर :

भारत के ग्रामीण खेतों में सिंचाई के लिये पी.वी.सी. पाईप्स के आगमन से एक क्रान्ति ही आ गई। इसके पहले कृषक सिंचाई के लिये दो रूढ पध्दति ही जानते थे। एक खुली फसलों पर बहते हुऐ तेज़ पानी से तथा दूसरा खूब लम्बी दबावरहित सिमेंट पाइप्स से पानी लेकर सिंचाई करना। यह पध्दतियाँ खर्चीली, पुरानी व मेहनत लेनेवाली थीं। इसका पर्याय ढूँढ कर श्री जैन ने हर कृषक को इसकी जानकारी भी दी। मध्यपूर्व के साथ यूरोप में भी भारत से पी.वी.सी. केसिंग व स्क्रीन पाइपिंग व्यवस्था निर्यात करनेवाले व पहले व्यक्ति थे।

ड्रिप इरिगेशन के लाभ कई हैं। फसलों में भरपूर बढ़त, जल्दी फसल होना, अच्छी फसल होना, पानी की भारी बचत, बिजली की बचत, खादों की मात्रा में घटोतरी, फसलों व सिंचाई की उपयुक्तता में बढ़ता इसलिये कृषकों के आत्मविश्वास के साथ ही उत्पादन भी बढ़ता है।

जनसंख्या-विस्फोट से कृषक कबके बर्बाद हो गये होते, पर वे तो २१वीं सदी के आह्वानों के लिये कबसे तैयार हैं। उनका आत्मविश्वास दुगुना हो गया और धैर्य तो देखते ही बनता है। इसका कारण है - निःसंदेह उतक संवर्धन से विकसित केले की पौध और उससे दिन दूना रात चौगुना उत्पादन ग्रॅण्ड जैन जाति के केलों के प्रकारों में हुई प्रगति का परिणाम ताजे केलों की जगभर बढ़े निर्यात से पता चलता है।

अपारम्पारिक वस्तुओं में कोई १०० करोड़ रुपये तक पहुँचे निर्यात और वह भी प्रगत पाश्चात्य देशों में ये श्री जैन की साधना की ही परिणिति है। प्लास्टिक शीट्स को 'एक्सेल' तथा अन्न उत्पादों को 'फार्म फ्रेश' के नाम से पञ्जीकृत कर उन्हें विकसित करके, युरोप व अमरीका के स्पर्धात्मक बाज़ारों में हिम्मत और मान से खड़ा किया।

सामाजिक उत्तरदायित्त्व का एहसास
मूल कार्य व सहायता : औषधोपचार हेतु चिकित्सालय आरोग्य शिविर, खेल, कसरत, प्राचीन उपचारों का पुनराधि
आयुर्वेद व बाराक्षार उपचार व ध्यान-धारणा।
सामाजिक : युवा महोत्सव, सामुदायिक विवाह, अपंगों को सहायता, समाजमन्दिर व पूजा-स्थल।
सांस्कृतिक : नाटक, लोकनृत्य, कवि सम्मेलन, संगीत-स्पर्धा।
शैक्षणिक : विद्यालय, कॉलेज, वाचनालय, ग्रन्थालय, चर्चासत्र व शिक्षावृत्ति।

महत्त्व के पद :

शासकीय : सदस्य, दूसरी जल परिषद् सदस्य (निवृत्त) सामाजिक व ग्रामीण विकास में इलेक्ट्रॉनिक्स (भारत सकरा)
निवृत्त सदस्य - प्लास्टिक प्रोसेसिंग उद्योग विकास संघ
सामाजिक : कई सार्वजनिक धार्मिक न्यासों पर आजीवन सदस्य, भारत कृषक समाज, आजीवन सदस्य ब्लाईंडस् असोसिएशन

मान-सम्मान :

१. तन्त्रज्ञान आत्मासात् करने हेतु संशोधन व विकास के प्रयत्नों हेतु डी.एस.आय.आर.।
२. खेती औद्योगिक क्षेत्र में प्रयत्नों हेतु डी.एस.आय.आर.।
३. असाधारण निर्यात के लिये व्यापार मन्त्रालय से सम्मान।
४. टिश्यू कल्चर्ड केले की फसलों में ड्रिप इरिगेशन व मॅन्युअर इरिगेशन के लिये प्रयत्नों में असाधारण योगदान हेतु ए.आय.पी.यु.बी. का पहला व़इझै पुरस्कार।
५. सी.एफ.बी.एफ. का जमनालाल बजाज पुरस्कार।

श्री जैन की गुणवत्ता व उत्कृष्टता की तीव्र इच्छा ही कम्पनी को साठ से अधिक पुरस्कार, चषक व गुणवत्ता प्रमाण पत्रक मिल पाये है।

सिंचन के क्षेत्र में कार्यरत संपूर्ण जगभर से ७००० से ऊपर औद्योगीक संस्थाओं द्वारा एकत्र होकर स्थापन किये गये इरिगेशन एसोसिएशन ऑफ यु.एस.ए. जैसी अत्यन्त सम्मानित संस्था ने इसी उद्योग में अमरीका के बाहर लाक्षणिक प्रयत्नों के लिये 'अन्तरराष्ट्रीय क्रॉफर्ड स्मृति पुरस्कार' रखा है। श्री जैन द्वारा असाधारण यश व आश्चर्यजनक प्रगति के लिये उन्हें १९९७ में ये पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार लेने वाले वे पहले भारतीय व दूसरे एशियाई हैं। श्री जैन को मिल दूसरे राष्ट्रीय पुरस्कार :

१) शेती में नयी तकनीक व व्यवस्थापन करने हेतु (फाई फाऊंडेशन अवार्ड)
२) व्यावसायिक यश व राष्ट्रीय स्तर पर व्यक्तित्व का प्रभाव डालने हेतु आय.टी.आय.इ. का मानक सदस्यत्व ३) स्वविकसित उद्योगपति बनने के लिये आय.टी.आय.डी. का उद्योगपत्र पुरस्कार।

व्यक्तित्व :

इस बौने पर रोबदार व्यक्तित्व ने भारतीयता की छाप लेकर जन्म लिया है। अनेक व्यवसाय में केवल लाभ ही नहीं बल्कि तात्त्विक विचार पध्दति की प्रेरणा अधिक है। दृश्य संपत्ति के स्तम्भ खड़े करने के अलावा उनकी दृष्टि दूर तक आरोग्य, शिक्षण और संस्कृति का संवर्धन और प्रगति के लिए मनःपूर्वक प्रयत्न और उसी के द्वारा ग्रामीण विकास के लिए भागदौड़ यही उनकी दैनंदिन जीवन का लक्ष्य है। भौतिक प्रगति की आशा और पर्यावरण के विकास में अर्थपूर्ण समन्वय स्थापित करना ही उनका एक मात्र ध्येय है। केवल चार वर्षों के काल में उन्होंने फलों के बाग लगाने के साथ-साथ जंगल लगाने के माध्यम से १,५०,००० से ऊपर वृक्षारोपण किया है। यह व्यक्ति जहाँ-जहाँ प्रकृति है वहाँ-वहाँ मौजूद है। इतने
कम समय में उन्होंने बहुत बड़ा काम कर दिखाया है। अगर उनकी सही पहचान किसी को चाहिये तो उसे उनके काम की पहचान करनी काफी होगी। श्री जैन का ध्येय वाक्य है : 'यह वसुधरा जैसी है उसे मै उससे अधिक सुन्दर कर के दम लूंगा।'

एक व्यक्ति की महानता उसके लक्ष्य से मापी जाती है। भारतीय कृषि का सिर उत्पादन में ऊँचा हो और उसकी मूल्यवृध्दि करके उसे ऊँचा दर्जा प्राप्त करवाना श्री जैन का एकमात्र लक्ष्य है। तकनीकी ज्ञान के द्वारा साधन-सम्पत्ति का संरक्षण और उत्पादन में सुधार करना भी उनके लक्ष्य में शामिल है। खेत, खेती और किसान यही उनके कार्यकारण सम्बन्ध हैं। उनके निर्माण के प्रति न केवल भारत में बल्कि सारे जग में किसान और सामान्य जन आकर्षित होते रहते हैं। श्री जैन और उनके सहयोगी कृषि व्यवसाय में एक संस्था के समान है अगर उनका पूरा जीवन देखा जाये तो उन्हें 'भूमिपुत्र' कहना गलत न होगा।

- प्रज्ञा

आप रोगी नहीं हैं

-डॉ. एम.एस. अग्रवाल

आज का मनुष्य अपने को रोगी मानता है। अनेक व्याधियां उसकी मित्र बन जाती हैं-उनके साथ खिलवाड़ करने में सुख अनुभव करता है, जब यह अवस्था बढ़ जाती है-पीड़ा की सिहरन सताने लगती है, देखता है रोग उसकी अपनी ही देन है-भटकता है- अस्पतालों के चक्कर काटता है-रोग की परीक्षा होती है लेकिन निदान नहीं हो पाता। कारण रोग के ज्ञान से व्याधि दूर खड़ी दिखाई देती है।

जब तक मनुष्य रोग से अपने को अलग नहीं करेगा-निदान असंभव है। सोचो आप वृन्दावन में विचर रहे हो-अनेक पुष्पवाटिकाएं सामने आती है। प्रत्येक पुष्प अपनी भाषा आपसे कहता है लेकिन एक पुष्प आपको झकझोर देता है। यही अवस्था तन्मयता की है जो उसके समीप आपको ले जाती है।

यही अवस्था रोग की है जब तक रोग से हटकर नहीं देखेंगे-पीड़ा सताती रहेगी। यही पीड़ा अनेक व्याधियों का नाम लेती है-कैंसर, टाईफाईड आदि। जिस समय अलग होकर अपने को देखोगे-सब शांत-रोग कहीं नहीं। व्याधि केवल दृश्य है, आप उसके द्रष्टा।

जीवन में मानव यही अवस्था नहीं प्राप्त कर पाता। जो कुछ वह देखता है, उसे अपने से भिन्न अनुभव करता है। इस संसार में जो कुछ हो रहा है उसके कर्ता आप ही हो और जो रहा है वह भी आप हो। वेद के इस ज्ञान से सब शांत आनंद के सागर में विचरने लगोगे-जहां रोग का आपके साथ कोई संबंध नहीं।

एक बार श्रीरामकृष्ण परमहंस को कैंसर हो गया था। डाक्टर देखने आए और कहने लगे-आपको काफी अनुभव होता होगा। परमहंस जी हंसकर बोले - मुझे कुछ भी पता नहीं। शरीर के अनुभव से अपने को दूर रखता हूँ।

जीवन में अगर जीना चाहते हो-द्रष्टा बनकर जीना सीखो। यही साधना है जिसे सबको अपनाना होगा। अगर प्रत्येक पल संसार की हवा में उलझे रहे-तो अनेक उलझनें घेर लेंगी और रोग की विभीषिका दिखाई देने लगेगी।

निरोगी बनने के लिए अपने रोगी मन में उसको प्रवेश का समय दो-प्रकाश की किरणें सारे अंधकार को दूर कर देंगी। यही अवस्था ध्यान की है जो रोग को दूर करने की मूल औषधी है।

आज का व्यक्ति रोग के निवारण के लिए अपने अंदर नहीं झांकता। थोड़ा शांत होकर बैठे-टिकाए और समर्पित होकर उसमें अपने को खो जाने दे-परिवर्तन स्वयं होने लगेगा-उसका हस्त रोग की मूल शक्ति का अंत कर देगा। यही अवस्था योग है जिसे आदिकाल से बड़े-बड़े ऋषि अपनाते हैं।

व्याधि एक अभिशाप है जो किसी दुष्कर्म के कारण हम में प्रवेश कर जाती है। इसे जानो-यही साधना है जिससे आप सचेतन हो जाओगे और जो संसार कल तक दुःखों का ज्वार भाटा दिखाई दे रहा था-वह शांत गंगा की धारा बन जायेगा।

आज का मनुष्य अपने को मन की परिधि में उलझाये रखता है-यही अवस्था है रोगी की। साधक प्रत्येक पल को समीप से देखता है और समाधिस्थ हो जाता है। बाहर देखना कोई मान्यता नहीं-अन्दर प्रवेश करता चला जाता है-समय की परिधि का ज्ञान नहीं रहता-कारण अपने चितानंद में लीन हो जाता है। यह अवस्था है द्रष्टा की। सब कुछ देखो-उलझो मत उलझना ही रोग है और जो इसके मृगजाल में फंस जाते हैं-डॉक्टरों का चक्कर शुरू हो जाता है। रोग अपना विकराल रूप धारण कर लेता है जबकि वास्तव में कुछ नहीं होता।

जीवन को समझो। प्रत्येक पल उसकी साधना का क्षण है जिसे आपको जीना सीखना होगा। अगर कोई चूक हो गई तो जिस शरीर के सहारे पृथ्वी पर आये हो उसकी आस्था ही मिट जायेगी-जन्मों का चक्कर सामने आ जायेगा। उनका मिलाप ही सिध्दि है-माया रूपी रोग से निवारण। यही ज्ञान जीवन को स्वर्णिम ज्योति के दर्शन कराता है।

●

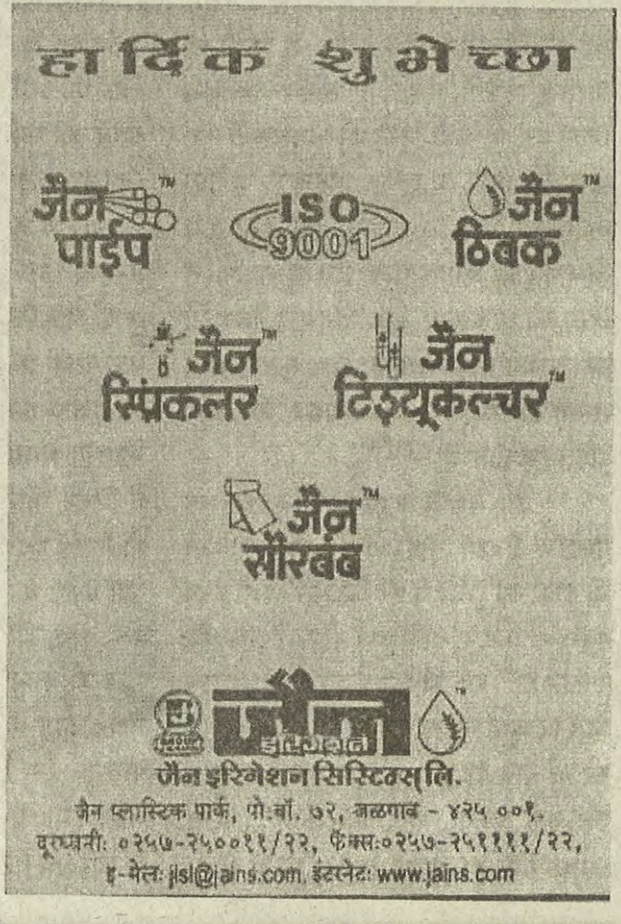

श्री भंवरलाल जैन परिवार : बायें से – सर्वश्री अनिल जैन, अशोक जैन, भंवरलाल जैन, श्रीमती कांताबाई भंवरलाल जैन, अजित जैन, अतुल जैन, (नीचे) सर्वश्रीमती निशा अनिल जैन, ज्योति अशोक जैन, शोभना अजित जैन, विनीता अतुल जैन बच्चे : आशुली अनिल जैन, आरोही अशोक जैन, अथांग अनिल जैन, अभेद्य अजित जैन, असोली अनिल जैन.

पूना के भवन-निर्माता 'आदित्य समूह' द्वारा प्रायोजित चर्चा सत्र में श्रोताओं के प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्री भंवरलाल जैन.

राष्ट्र की नींव मजबूत करने के लिए उज्वल चरित्रवाले राष्ट्रवादी भवन-निर्माताओं की आवश्यकता है – श्री भंवरलाल जैन

egd. No.: PR/RNP/PNE/F/35/2002